* सीखने के सूझ का सिद्धान्त (Insight theory of Learning) :—

इतिहास :—

सूझ या अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त का प्रतिपादन गेस्टॉल्टवादीयों के मनोवैज्ञानिक द्वारा किया गया है। गेस्टॉल्टवादीयों के प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेष कर कोह्लर 1925 ई० तथा कोफ्का (Kofka) 1924 ई० द्वारा यह सिद्धान्त को प्रतिपादन किया गया।

गेस्टॉल्ट एक जर्मन शब्द है। जिसका नजदीकी अंग्रेजी शब्द (configuration) माना जा सकता है जिसका अर्थ समग्राकृति या पूर्णाकार है।

सन् 1925 ई० सबसे पहले कोह्लर ने सूझ अन्तर्दृष्टि शब्द का प्रयोग किया। सन् 1913 से 1917 ई० के बीच केनरी द्वीप में कोह्लर ने कई तरह के पशुओं जैसे बंदर, मुर्गी, कुत्ता तथा वनमानुष पर प्रयोग किया।

कोह्लर द्वारा सुल्तान नामक वनमानुष द्वारा किया गया प्रयोग सर्वाधिक प्रचलित हो गया।

Concept :—

इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति किसी प्रक्रिया को सूझ या अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखता है। जब भी व्यक्ति किसी विषय या पाठ को सीखता है तो वह सीखने से संबंधित परिस्थिति को हर पहलू को समझने की कोशिश करता है। इस कोशिश में वह परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं को नये ढंग से प्रत्यक्षण कर संगठित करने का प्रयत्न करता है। ताकि समस्या का समाधान आसानी से हो सके। जब वह परिस्थिति के भिन्न-भिन्न पहलुओं को नये ढंग से प्रत्यक्षण कर उससे आपसी संबंधो को समझ जाता है तो उसमें ~~जब~~ अचानक सूझ उत्पन्न होती है, जिसे अहा! अनुभव (Aha Experence) भी कहा जाता है।

कोह्लर तथा कोफ्का की इस व्याख्या से स्पष्ट है कि सीखना धीरे-धीरे नही बल्कि एकाएक होता है। क्योंकि यह सूझ द्वारा होता है न कि अभ्यास तथा प्रयत्न एवं भूल द्वारा होता है।

* प्रयोग :—

कोह्लर ने इस प्रयोग में सुल्तान नामक भूखे वनमानुष को एक ऐसे पिंजड़े में बन्द कर दिया जिसकी उची छत से केले का एक गुच्छा लटक रहा था उसी पिंजड़े के अन्दर दो-तीन लकड़ी के बक्से इधर-उधर पड़े हुए थे। सुल्तान ने छत में लटके हुए केले को देखा तथा उछल-कूदकर उसे प्राप्त

करने का प्रयास किया। किन्तु छत की ऊँचाई अधिक होने के कारण वह केलों को प्राप्त न कर सका अर्थात् केले के गुच्छे तक सुल्तान का हाथ नहीं पहुँच सका। तब उसने सम्पूर्ण परिस्थिति को समझने का प्रयास किया। तथा कमरे में चारों तरफ इधर-उधर नजर दौड़ाई। इस बीच उसे कमरे में पड़े हुए लकड़ी के बक्से दिखलाई पड़े। वह लकड़ी का एक बाक्सा उठा लाया तथा उसे बीच में रखकर और उसपर चढ़कर केलातक हाथ पहुँचाने का प्रयास ~~किया~~ करने लगा। किन्तु अब भी केले की ऊँचाई (दूरी) अधिक होने के कारण उन्हे प्राप्त करने में असफल रहा। इसके बाद वह दूसरा बाक्स भी उठा लाया और उसे पहले बाक्स के ऊपर रख दिया। अब उस पर चढ़ने से उसका हाथ केले के गुच्छे तक पहुँच गया तथा वह केला प्राप्त करने में सफल हो ~~सका~~ गया। ~~इन प्रयोगो~~

कोहलर के इन प्रयोगों से स्पष्ट होता है कि समस्या का समाधान में अन्तर्दृष्टि या सूझ की ~~और भूल~~ की आवश्यकता होती है। उच्च बुद्धि स्तर के प्राणी प्रयास और भूल की अपेक्षा सूझ के प्रयोगो से समस्या का समाधान करते है साथ ही प्रयोगो से स्पष्ट है कि किसी नवीन समस्या के समाधान से संबंधित सभी साधनों को एक साथ उपलब्ध होने से सूझ उत्पन्न होती है।

* सूझ द्वारा सीखने के सिद्धान्त को प्रभावित करने वाला कारक।

प्रयोग के आधार पर सूझ द्वारा सीखने का कारक निम्नलिखित है। —

(i) अनुभव
(ii) बुद्धि
(iii) अधिगम परिस्थिति
(iv) अभ्यास एवं परिस्थिति
(v) प्रारंभिक प्रयास
(vi) अभ्यास एवं सामान्यिकरण

अनुभव :— सूझ को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारण अनुभव है। प्राप्त अनुभव के आधार पर व्यक्ति अपनी किसी समस्या का समाधान अतिशीघ्र कर लेता है।

बुद्धि :— बुद्धि अन्तर्दृष्टि या सूझ को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक है, उच्च बौधिक क्षमता युक्त व्यक्तियों में सूझ अधिक होता है।

अधिगम परिस्थिति :—

अधिगम परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति में कितना सूझ के साथ प्रतिक्रिया करता है कुछ परिस्थितियाँ सूझ उत्पन्न करने में सहायक होती हैं।

प्रारंभिक प्रयास :—

अधिकांश मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि अन्तर्दृष्टि उत्पन्न होने के लिए प्रयत्न तथा भूल के रूप में प्रारंभिक प्रयास आवश्यक होती है। प्रयत्न तथा भूल करने की क्रियाओं में ही एका-एक सूझ या अन्तर्दृष्टि उत्पन्न होती है।

अभ्यास एवं सामान्यीकरण :—

किसी भी समस्या का सूझ से समाधान निकालने के बाद उसी विधि को अन्य परिस्थिति में उपयोग करना चाहता है और नई समस्या की समाधान की अपेक्षा करता है।

* सूझ के सिद्धान्त के शैक्षिक आसय / निहितार्थ / महत्व पर प्रकाश डालें। (Educational Implications of insight)

शिक्षा के दृष्टिकोण से कोहलर के सूझ का सिद्धान्त अधिक महत्वपूर्ण बताया गया है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक ने कक्षा में होने वाले पठन - पाठन के लिए सूझ के इस सिद्धान्त के आसय तथा उपयोगिताओं का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है।

⇒ सूझ का संबंध बुद्धि, चिंतन, तर्क एवं कल्पना शक्ति से होता है। अतः अध्यापकों को बालक के मानसिक विकास में सूझ का उपयोग करने हेतु कक्षा में समस्यात्मक परिस्थिति को प्रस्तुत करना चाहिए ताकि उनमें सूझ का विकास हो सके।

⇒ सूझ द्वारा सीखना चूँकि एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है अतः उनमें बालक सचेतन प्रयास ~~द्वारा~~ द्वारा सीखता है जिसका प्रयोग समस्या समाधान विधि हेतु किया जा सकता है।

⇒ इस सिद्धान्त के अनुसार किसी समस्या को बच्चों के समक्ष पूर्ण रूप से में ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए। तत्पश्चात उसके अंगों का ज्ञान कराकर सम्पूर्ण ज्ञान देना चाहिए।

⇒ अध्यापकों को बालक के समक्ष अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए ताकि वे स्वयं सीखने हेतु क्रियाशील हो सके।

⇒ इस सिद्धान्त के प्रयोग से बालकों में यंत्रवत् सीखना अर्थात् रटने की क्रिया में कमी लायी जा सकती है।

⇒ इस सिद्धान्त के प्रयोग से बालको में खोज-पूर्ण प्रश्न कौशल, समस्या समाधान से संबंधित गृहकार्य करने का कौशल तथा अपने विषयगत पूर्ण अनुभव को नई स्थितियों में अयोग करने का कौशल विकसित किया जा सके।

⇒ यह विधि गणित एवं विज्ञान जैसे उच्च मानसिक क्रिया वाले विषयों के लिए बहुत उपयोगी है।

⇒ इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चों की आयु बुद्धि एवं परिपक्वता पर सूझ निर्भर करती है। अतः पाठ्यक्रम के निर्माण में बालको को बौधिक विकास, आयु एवं परिपक्वता को दृष्टिगत रखना चाहिए।

सूझ द्वारा सीखने की विशेषताएँ

इस सिद्धान्त की विशेषताएँ निहित है जो निम्न प्रकार है —

⇒ सूझ द्वारा सीखना एक संज्ञात्मक प्रक्रिया है अतः इस प्रकार सीखना लाभप्रद / उपयोगि है।

⇒ सूझ द्वारा सीखने से व्यक्ति का बौद्धिक स्तर उच्च होता है। अतः इसमें सूझ का विकास अत्यन्त तीव्र गति से होता है।

⇒ व्यक्ति में सूझ अचानक उस समय उत्पन्न होती है, जब वह लक्ष्य तथा लक्ष्य पर पहुँचने के आधों के बीच से प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक संबंधो को ठीक तरह से समझ लेता है।

⇒ इस विधि द्वारा अधिगम स्थानान्तरण सुगम होता है अतः सीखे गये ज्ञान का नवीन परिस्थितियों में स्थानान्तरण किया जाता है।

⇒ इस विधि द्वारा सीखने की प्रक्रिया यंत्रवत् नही बल्कि उद्देश्यपूर्ण और सृजनात्मक होती है क्योकि इसमें संज्ञानात्मक स्तर पर अधिगम संरचनाओं के निर्माण की प्रक्रिया चलती है।

⇒ सूझ द्वारा समस्या का हल करने हेतु किया गया प्रत्येक प्रयास परस्पर संबंध होता है। तथा पूर्व व्यवहार को संगठित और परिवर्तित करने में यह सहायक सिद्ध होता है।

⇒ सूझ का सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि प्राणी विशिष्ठ उद्दीपको के प्रति अनुक्रिया न करके सम्पूर्ण परिस्थिति में विद्यमान उसके घटको के मध्य उपयुक्त संबंधो के प्रति अनुक्रिया करता है।

⇒ इस विधि द्वारा सीखना स्थायी सुस्पष्ट होता है अतः व्यक्ति किसी एक परिस्थिति विशेष में सीखे हुए ज्ञान का उपयोग किसी अन्य परिस्थिति में कर सकने में सक्षम है।

⇒ अधिगम मनोवैज्ञानिक के क्षेत्र में यह एक महत्वपूर्ण एवं व्यापक सिद्धान्त है क्योकि इसमें अधिगम उद्देश्य परख होने के साथ ही नवीन ज्ञान की आवश्यकता उपयोग पर भी बल देता है।

⇒ यह सिद्धान्त जटीली कार्यों को सीखने में बहुत उपयोगी है क्योकि सूझ विधि द्वारा उत्पन्न व्यवहार अन्वेशात्मक प्रकृति की ही होती है।

* सूझ की सिद्धान्त की सीमाएँ / आलोचना / दोष का उल्लेख करे।

Ans इस सिद्धान्त की शिक्षा में उपादेयता होते हुए भी दोष है कुछ मनोवैज्ञानिक ने इसकी कुछ भी कमीयों की ओर देखते हुए इसकी अवहेलना आलोचना निम्न रूपो से करते है।—

⇒ इस सिद्धान्त में सीखने की प्रक्रिया में प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने की ~~प्रक्रिया में~~ यांत्रिक प्रक्रिया का विरोध किया गया है। परन्तु सूझ द्वारा सीखते हुए किये गये प्रारंभिक प्रयास प्रयत्न और भूल पर आधारित है तथा ये प्रयास ही सूझ उत्पन्न करते है। अधिगम को पुरा करने का मार्ग दिखाते है।

⇒ अधिगम को सदैव सूझ के आधार पर मानना भी पूरी तरह ठीक नहीं है। प्राणी प्रयत्न और भूल द्वारा सुधार, अभ्यास, अनुभव द्वारा सीखता है।

⇒ इस सिद्धान्त के नियमों के अनुसार समस्त प्रकार का अधिगम नहीं किया जा सकता है।

⇒ व्यक्ति में सूझ उत्पन्न होने हेतु उच्च मानसिक योग्यताओं की आवश्यकता होती है अतः निम्न ~~बौधिक~~ बौद्धिक क्षमता वाले प्राणियों के अधिगम की व्याख्या इस सिद्धान्त द्वारा नहीं की जा सकती है।

⇒ सूझ द्वारा जटिल समस्याओं का समाधान तो होता है परन्तु सीखने में अनुभव और अभ्यास की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

वास्तव में मे प्राणी किसी अनुक्रिया को अचानक नही सीखता है बल्कि छोटे - छोटे अभ्यास द्वारा सीखता है।

⇒ छोटे बालक प्रायः सूझ की अपेक्षा अभ्यास और पुनरावृति से अधिक सीखते है।

⇒ यह प्रयोग केवल पशुओं पर हुए है।

नोट:-

कोहलर और उसके समर्थक द्वारा सूझ अधिगम को अचानक उत्पन्न अहा! अनुभव के रूप में स्वीकार किया गया है। परन्तु अनेक मनोवैज्ञानिक के प्रयोगो द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि सूझ अनेक कारको जैसे कुछ अनुभव प्रारंभिक प्रयास अधिगम परिस्थिति पुनरावृति समानार्थीकरण और विभेदीकरण आदि पर निर्भर करती है।

*** निष्कर्ष:-**

सूझ के इस सिद्धान्त से स्पष्ट हो जाता है कि सीखने की प्रक्रिया जब सूझ द्वारा होते है तो वह अचानक होती है क्योंकि व्यक्ति सूझ अचानक ही होती है।